हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-VI (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL6**

निर्धारित समय: तीन घंटे ***Time allowed: Three Hours***

अधिकतम अंक: 250 ***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): Dilkhush

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 6 01/09/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	3	0	3	7	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Dilkhush

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) जी जै न ठाँउ न आपन गाँउ, सुरालयहू को न संबल मेरे।
नाम रटो, जमवास क्यों जाउँ, को आइ सकै जम-किंकर नेरे।
तुम्हरो सब भाँति, तुम्हारिय सौं, तुम्ही, बलि हौ मोकों ठाहरु हेरे।
बैरष बाँह बसाइए पै, 'तुलसी' घरु ब्याध अजामिल खेरे।।

प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकाल की रामकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि 'तुलसीदास' जी द्वारा कृत 'कवितावली' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में उनकी भक्ति में निष्ठा को बताया गया है।

तुलसीदास जी कह रहे हैं कि उनका उद्देश्य तो सिर्फ भगवान का नाम रटने का है अर्थात् राम की भक्ति में लीन होना है, उनको दुनिया के अन्य विकल्पों से क्या लेना देना।
अजामिल की कथा के माध्यम से वे बताना चाहते हैं कि भगवान दयालु हैं, वे भूलवश हुई गलतियों को भी माफ कर देते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

① भाव-सौन्दर्य →
प्रस्तुत पंक्तियों में तुलसीदास जी का 'दास्य भाव' प्रकट हुआ है,
उन्होंने कहा भी है कि
"रामसों बड़ो है कौन, मोसो कौन छोटो,
राम सों खरो है कौन, मोसो कौन खोटो।"

② पंक्तियों में सगुण राम की भक्ति पर जोर दिया है। उनकी मान्यता है कि -
'दशरथ सुत भगवान भगत हित, कोसलपति भगवान'

③ शिल्प-सौन्दर्य
कवित्त छन्द का सुन्दर प्रयोग किया है जिससे लयात्मकता बनी हुई है।

④ भाषा अवधी में ब्रज का मिश्रण से बनायी है।

⑤ 'अजामिल' की मान्यता का प्रयोग किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) आइ न सकौं तुझ पैं, सकूँ न तुझ बुझाइ।
जियरा यौंही लेहुगे, बिरह तपाइ तपाइ।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पिउ बियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा तस बोलै पिउ पीऊ।
अधिक काम दगधै सो रामा। हरि जिउ लै सो गएउ पिय नामा।
बिरह बान तस लाग न डोली। रकत पसीचि भीजि तन चोली।
सखि हिय हेरि हार मैन मारी। हहरि परान तजै अब नारी।
खिन एक आव पेट महँ स्वाँसा। खिनहि जाइ सब होइ निरासा।
पौनु डोलावहिं सींचहिं चोला। पहरक समुझि नारि मुख बोला।
प्रान पयान होत केइँ राखा। को मिलाव चात्रिक कै भाखा।
आह जो मारी बिरह की आगि उठी तेहि हाँक।
हंस जो रहा सरीर महँ पाँख जरे तन थाक।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ निर्गुण प्रेमाश्रयी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' से ली गई है। इसमें नागमती वियोग खण्ड' में नागमती की विरह दशा का मार्मिक प्रस्तुतीकरण किया गया है।

• इन पंक्तियों में नागमती कहती है कि प्रियतम के वियोग में जीना दुभर हो गया है। इस वियोग में तो शरीर भी पूरा रक्त से सना हुआ है। हे सखि! हृदय से हार गई हूँ और अब तो प्राण त्यागने में ही सार है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष →

① आ० शुक्ल ने इसे "ऐहिकतापरक आदिम-मांसलों का निर्लज्ज प्रलाप नहीं, बल्कि हिन्दू गृहिणी की विरह वाणी है" कहा और इसे उच्चतम कोटि का विरह बताया।

② जैसी सूरदास व-गोपियों की दशा थी, वैसा ही विप्रलंभ नागमती के विरह वर्णन में देखने को मिलता है।

③ बारहमासा चौपाइयों के बाद एक दोहे का छन्द देने का प्रयोग किया गया है।

④ भाषा ठेठ अवधी व लयात्मकता व बिम्बात्मकता का प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

प्रस्तुत पद्यांश प्रयोगवाद व नई कविता के प्रतिनिधि कवि 'अज्ञेय' के 'आँगन के पार द्वार' संकलन में 'असाध्यवीणा' कविता से लिया गया है। इसमें वीणा के न बजने से व्यथित राजा की स्थिति को बताया है।

राजा बताता है कई नाम-गुण प्रवीण वादकों ने वीणा को बजाने का प्रयास किया लेकिन उनकी विद्या, सृजनात्मकता में नहीं बदल सकी, और अब यह असाध्यवीणा प्रसिद्ध हो गई है। राजा को विश्वास है कि कोई कलाकार जो सृजन की अर्हता को पूरी तरह

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जानता हो, वही इसे साध सकता है।

विशेष :- (काव्य-सौन्दर्य) :

भाव-सौन्दर्य -

① 'सर्जन की अर्हता' तत्व की आवश्यकता को अज्ञेय ने उभारा है। 'अंहकार का विलयन' व आत्मनिवेदन का भाव पर बल।

② सृजनात्मकता का उद्घोष सच्चे स्वर-सिद्ध से ही होगा।

शिल्प-सौन्दर्य -

③ तत्सम प्रधान भाषा होते हुए भी लयात्मकता व अर्थवत्ता बनी हुई है।

④ वीणा का प्रतीकात्मक अर्थ 'कला' से स्वर-सिद्ध का 'कलाकार' से।

⑤ छंद-मुक्त नई कविता की झलक।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) धर्म का है एक और रहस्य भी,
अब छिपाऊँ क्यों भविष्यत् से उसे?
दो दिनों तक मैं मरण के भाल पर
हूँ खड़ा, पर जा रहा हूँ विश्व से।
व्यक्ति का है धर्म तप, करुणा, क्षमा,
व्यक्ति की शोभा विनय भी त्याग भी,
किन्तु, उठता प्रश्न जब समुदाय का,
भूलना पड़ता हमें तप-त्याग को।

प्रस्तुत पंक्तियाँ ओजगुण से परिपूर्ण कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित 'कुरुक्षेत्र' से ली गई हैं। इनमें युद्ध के में विनाश से व्यथित युधिष्ठिर को, भीष्म पितामह गूढ़ रहस्य का उद्घाटन कर रहे हैं।

भीष्म पितामह बताते हैं कि जिस धर्म या नैतिकता के लिए तुम व्यथित हो उसका एक और रहस्य है कि वैसे तो व्यक्ति का धर्म तपस्या, दया क्षमा व परोपकार है और त्याग आदि, है लेकिन जब समाज या मर्यादा का प्रश्न उठता हो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तो उन्हें तप - त्याग को भूलना पड़ता है और युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

विशेष -

① 'दिनकर' जी ने भीष्म-पितामह की भाँति अंतर्मन तट पर पहुँचकर गूढ़ रहस्य को उद्घाटित किया है-
" क्षीणता हो स्वत्व और कोई,
तू, तप - त्याग से काम ले
यह पाप है।"
इसकी कविता की आरंभिक पंक्तियों में बताया है

② व्यक्ति के धर्म व अधर्म का यथार्थवाद वर्णन।

③ भाषा तत्समी होते हुए भी लयात्मक व ओजगुण से परिपूर्ण।

④ भयानक व विराट बिंबों की अभिव्यक्ति।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'असाध्य वीणा 'मौन से स्वर' और 'स्वर से मौन' की यात्रा है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में असाध्य वीणा की अंतर्वस्तु का विश्लेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'असाध्यवीणा' अज्ञेय द्वारा रचित लम्बी कविता है जिसमें वे अपने काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों को प्रस्तुत करते हैं। जापानी लोक-कथा के भारतीयकरण से रचित यह कविता 'सृजनात्मकता' को केन्द्र में रखती है।

शुरुआत में जब असाध्यवीणा को बजाने का प्रयास किया गया, तब वह मौन अवस्था में रहती है किन्तु 'प्रियंवद' के आगमन ने व उसके आत्मनिवेदन से वीणा सहसा झनझना उठती है। अतः इसमें स्वरों की व्युत्पत्ति होती है। और अन्त में सब अपने-अपने 'स्वधर्म' की पहचान करके युग-परिवर्तन

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की ओर अग्रसर होते हैं तो वीणा पुनः मौन की अवस्था में आ जाती है।

आरंभिक क्षणों में राजा थका सा दिखाई देता है कि ~~हार गये~~ 'मेरे हार गये जब जाने-माने कलावंत सबकी विद्या हो गई, अकारथ, दर्प चूर'

लेकिन जब प्रियंवद का आगमन होता है तो वह वीणा को नहीं बल्कि स्वयं का शोधन करता है और वह स्वयं उस 'किरीट-वृक्ष' में अपने आप को खो देता है जहाँ से वीणा में स्वर पैदा होता है। "शोध रहा था प्रियंवद वीणा को, नहीं - स्वयं अपने को सौंप रहा था उसी किरीट वृक्ष को।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जैन बौद्धमत से प्रभावित होने के कारण 'अज्ञेय' ने मलमौन से स्वर को गुंजायमान बनाया है और 'सहसा झनझना उठी वीणा' से 'मौन से स्वर' की यात्रा होती है।

लेकिन अगले ही क्षणों में राजा से लेकर प्रजा तक, सभी वीणा के स्वरों से मंत्रमुग्ध होकर अपने स्वधर्म की पहचान करते हैं वे 'अलग-अलग एकाकी पार तिरे' वाली प्रक्रिया शुरु हो जाती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"उठ गयी सभा। सब अपने-अपने काम लगे। युग पलट गया..."

और इसी बिन्दु के साथ असाध्यवीणा का स्वर भी शांत हो जाता है और कवि की वाणी भी मौन अर्थात् उसी महामौन में पुनः समा हो जाती है।

ध्यातव्य है कि यह यात्रा 'मौन से स्वर' व पुनः 'स्वर से मौन' की यात्रा है जिसे अज्ञेय ने प्रयोगवादी शिल्प, अस्तित्ववादी व ज़ेन बौद्धमत की अवधारणाओं से रचित किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' में प्रयुक्त फैंटेसी शिल्प के स्वरूप एवं औचित्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

फैंटेसी पश्चिमी साहित्य की विधा है जिसमें व्यक्ति स्वप्न या कल्पना के माध्यम से वास्तविक जीवन की अपूर्णताओं की काल्पनिक पूर्ति कर सकता है।

इसी फैंटेसी के माध्यम से मुक्तिबोध ने अपनी कविताओं को बिम्बों के सर्वोच्च स्तर पर ~~[illegible]~~ व अपनी आँतरिकता को भरने की सफल कोशिश की है।

फैंटेसी के माध्यम से मुक्तिबोध अपने प्रतीक नायक 'ब्रह्मराक्षस' के आंतरिक जगत का विचरण कर सके हैं व उसकी अचेतन व अवचेतन मन की ~~[illegible]~~ यात्रा संभव हो सकी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'शहर के उस तरफ, खंडहर की ओर'

ऐसा रहस्यात्मक वर्णन फैंटेसी शिल्प के माध्यम से ही संभव है जहाँ अमूर्त वस्तुओं को मूर्त रूप दिया जा सकता है।

"खूब ऊँचा एक जीना साँवला
उसकी अंधेरी सीढ़ियाँ,
वे उस आभ्यंतर निराले लोक की,
एक चढ़ना और उतरना
पुनः चढ़ना और लुढ़कना ..."

यह आंतरिक जगत का वर्णन फैंटेसी के माध्यम से ही मुक्तिबोध ने कविता में रोचकता व बिम्बात्मकता पैदा की।

यथार्थ के परस्पर गुंफित तत्वों को मुक्तिबोध ने फैंटेसी के माध्यम से कल्पित रूप में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत किया जिससे अंधेरे में भी बिम्बात्मकता का आगमन हो सका। 'अनगिन शामिल बिन्दुओं, फैले हुए गणित में'। बावड़ी का वर्णन -

'खड़ी है वही मनोहर
कुहरे देख,
खड़े हैं मौन औदुम्बर'

यह बावड़ी अर्थात् अचेतन मन की यात्रा कल्पना के माध्यम से हुई, जिसके कारण 'अभिबोध' अपनी आत्मपिछलता को प्रस्तुत कर सके।

स्पष्ट है कि फैंटेसी जैसे शिल्प के माध्यम से न केवल अभिबोध आत्मचेतस से विश्वचेतस होने की चलचित्र जैसे दिखाया है बल्कि वैचारिकता की महत्ता को भी प्रदर्शित किया, यहाँ तक विज्ञान, गणित आदि के चित्र खींचे हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) 'सृजनात्मक रहस्यवाद' के परिप्रेक्ष्य में 'असाध्य वीणा' कविता की अंतर्वस्तु का अवगाहन कीजिये। 15

'असाध्यवीणा', "अज्ञेय" द्वारा रचित कविता हैं जिसमें वे सृजनात्मकता का चिंतन केन्द्र में रखते हैं।

जैन बौद्धमत्त व अस्तित्ववाद जैसी विचारधाराओं से प्रभावित अज्ञेय ने सृजन के तत्वों, की एक नयी व्याख्या प्रस्तुत की, जिसका विवरण उनकी 'रहस्यवाद' नामक कविता में भी मिलता है। "मैं रहस्यवादी हूँ. लेकिन मेरा रहस्यवाद परमात्मा की ओर उन्मुख"

अतः उन्होंने अपना रहस्यवाद महामौन की उपस्थिति में जमा किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह बात सही है कि शुरुआत में अज्ञेय ने अध्यात्म व ईश्वर का विरोध किया लेकिन अंत में उन्होंने 'महामौन' व 'सब कुछ' के माध्यम से अपने रहस्यवाद को उद्घाटित किया।

'मैं कहीं नहीं, मैं नहीं कहीं' कहकर अपनी लघुता के बोध को व्यक्त किया व वीणा के स्वर को 'सबकुछ की तथता' बताया उनके रहस्यवादी होने को बताता है।

और यह रहस्यवाद सामान्य न होकर युग-प्रवर्तनकारी है जिसके माध्यम से लोग अपने 'स्वधर्म' की पहचान करते हैं -
'राजा ने कुछ और देखा, रानी ने कुछ और।'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'डूब गये सब एक-साथ,
सब अलग-अलग एकाकी पार तिरे।'

इन पंक्तियों में अज्ञेय का आत्मसमर्पण नजर आता है तथा अंत में "उठ गयी सभा। सब अपने-अपने काम लगे, युग पलट गया।"

कहकर रहस्यवाद का व्यक्तित्वांतरण तो आता है, जहाँ प्रत्येक मनुष्य 'सबकुछ की तथता' के माध्यम से अपने-अपने कर्तव्यों में लग जाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) व्यक्ति और समाज के संबंध को लेकर अज्ञेय के क्या विचार हैं? 'असाध्य वीणा' कविता के आधार पर बताइये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. 'अज्ञेय' 'व्यक्ति की स्वतंत्रता' व सृजनात्मकता के प्रयोगशीलता पर बल देते हैं।

उनके 'व्यक्ति व समाज' के संबंध उनकी कविता 'नदी के द्वीप' में साफ तौर पर नज़र आता है जहाँ वे कहते हैं:-

"हम नदी के द्वीप हैं, जो हमें आकार देती है,
लेकिन हम बहते नहीं,
क्योंकि बहना रेत होना है।"

इन पंक्तियों में वे कहना चाहते हैं कि यद्यपि व्यक्ति समाज 'में' स्वतंत्र है, लेकिन समाज 'से' नहीं।

'असाध्य वीणा' में भी वे इसी बात पर बल देते हैं कि जो स्वर वीणा में बजता है व न तो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'त्रिपवंद' की अपनी कला है, न वीणा में निहित स्वर। वह तो वर्षों से उस किरीट-तरु की डालियों पर बैठे पक्षियों की चहचाहट, व इस पेड़ की लकड़ी में समाहित वातावरण का स्वर है।

"साध रहा था त्रिपवंद वीणा को नहीं, शोध रहा था स्वयं को सघन निविड़ वन में, सौंप रहा था उसी किरीट तरु को।"

इसी बात की पुष्टि वे आगे की पंक्तियों में करते हैं जहाँ कहते हैं कि हम अपनी कला के लिए बहुत सारी चीजों पर निर्भर हैं।

समाज के प्रति अपने 'स्वधर्म' को पहचानना व उसी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के अनुसार कर्तव्य करना, व्यक्ति व समाज को युग-पलटकारी बना सकते हैं।

आज के समय जहाँ व्यक्ति समाज से शक्तिहीन होकर मुक्ति पाना चाहता है लेकिन यह अपेक्षित नहीं है क्योंकि समाज के ढांचे में ढलकर ही मनुष्य प्रगति कर सकता है न कि स्वतंत्र रहकर। अतः इनके विचारों की ~~प्रासंगिकता~~ स्पष्ट है।

वीणा का स्वर बजने पर राजा में अपना धर्म पहचाना, रानी ने अपना और "उठ गयी सभा। सब अपने-अपने काम लगे और युग पलट गया।" इन संबंधों को विस्तार से व्याख्यायित करता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अतः स्पष्ट है कि अन्य कविताओं में अपनी विचारधारा के समान '<u>असाध्यवीणा</u>' में भी अज्ञेय इसी बात पर बल देते हैं कि वैयक्तिकता स्वतंत्र नहीं हो सकती और मनुष्य समाज 'में' तो स्वतंत्र है लेकिन <u>समाज से नहीं</u>।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

यद्यपि नागार्जुन समाजवाद मार्क्सवादी अवधारणा से प्रभावित कवि है लेकिन वे समाजवाद की भंगिमाओं को धारण करने से बचते हैं, एवं स्वयं को जनकवि कहते हैं,

"दुनिया पूछ रही है मुझसे क्या बतलाऊँ
जनकवि हूँ मैं, कहने में क्यों हकलाऊँ।"

अतः उनकी कविताओं, वर्णनों में जो चित्र उन्होंने खींचे वह सामान्य जनजीवन व उसके ईर्द-गिर्द वातावरण पर ही केन्द्रित है न कि अभिजात वर्ग पर।

उनकी कविता 'अकाल और उसके बाद' में वे अकाल की स्थिति व उससे उबरने की स्थिति का मार्मिक वर्णन करते हैं, जिससे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आँखों के सामने ग्रामीण अर्थव्यवस्था का चित्र खिंच जाता है।

"कई दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास,

x x x

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।"

इन पंक्तियों में साधारण-जीवन व्यक्त हुआ है।

इसके अलावा उनके अनुभवों व अनुभूतियों के वर्णनों, साधारण जनजीवन की भाषा का प्रयोग; तथा प्रकृति के समस्त चराचर वस्तुओं का वर्णन शामिल करना, इनकी पुष्टि करता है कि वे जनकवि है।

यहाँ तक कि वे अपनी विचारधारा की प्रतिबद्धता को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी भूल जाते हैं और कहते हैं -
"क्या है दक्षिण, क्या है वाम, जनता को रोटी से काम।"

'हरिजन गाथा' में इनका जनकवि होना चरम स्तर पर नज़र आता है जहाँ वे उच्च वर्ण के होकर भी, दलितों की व्यथा का स्वर्यवेदना वाले अनुभव का वर्णन करते हैं।

'रोता हूँ लिखता जाता हूँ ...
जैसी से उनका जनजीवन के प्रति लगाव नज़र आता है और साथ ही वे अभिजात वर्ग के काल्पनिक सौन्दर्य की धज्जियाँ उड़ाकर, साधारण व यथार्थवादी सौन्दर्य को अपनाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'ब्रह्मराक्षस' कविता की बिंब-योजना के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिंबों के प्रयोग में मुक्तिबोध का कोई सानी नहीं है, उनकी कविताओं को 'बिंबों का नगर' भी कहा जाता है।

यथार्थ की जटिलता व ~~परस्पर~~ परस्पर गुंफित तत्वों को बिंबों के माध्यम से उन्होंने सहज व संप्रेषणीय बना दिया है।

'ब्रह्मराक्षस' कविता की पहली ही पंक्ति "शहर के उस ओर, खंडहर की तरफ परित्यक्त सूनी बावड़ी..." बिम्बात्मक दृश्य खींचती है।

इसके बाद जहाँ बावड़ी का वर्णन आता है, मुक्तिबोध ने बावड़ी का चलचित्र सा खींच दिया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बेल बूटे कैसे हैं? कहाँ लटक रहे हैं? आदि का वर्णन अतुलनीय है।

'ब्रह्मराक्षस' का वर्णन तो श्रव्य बिम्ब व दृश्य बिम्ब का सम्मिलित रूप नजर आता है।

"बाघ के पंजे बराबर..
बातें बातें छपाछप"

तथा ब्रह्मराक्षस का आंतरिक वर्णन तो और रहस्योद्बोधक है -

"खूब ऊँचा जीना साँवला
उसकी अंधेरी सीढ़ियां -
वे गिनते आभ्यांतर लोक की..
एक चढ़ना औ' उतरना
पुन चढ़ना औ' लुढ़कना।"

यह वर्णन तो 'मुक्तिबोध' ने ऐसा किया जैसे यथार्थवादी मनुष्य गिरकर-चढ़ रहा हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाज से टूटते हुए मनुष्य का बिंब भी 'मुक्तिबोध' ने अकल्पनीय खींचा है - 'वह कोठरी में अपना गणित करता रहा और मर गया।'

डॉ. निर्मला जैन ने तो यह भी कहा, कि "उजाले के चितेरे तो बहुत कवि हुए हैं लेकिन अंधेरे से रूबरू होने की हिम्मत तो निराला व मुक्तिबोध जैसे कवि ही कर सकते हैं।"

उनकी अन्य कविता जैसे 'अंधेरे में' तो विराट या भयानक, एकल व संश्लिष्ट बिंबों का नगर है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'ब्रह्मराक्षस अस्तित्ववादी मान्यताओं और खंडित व्यक्तित्व का प्रतीक है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) करते हुए उसके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये:

10 × 5 = 50

(क) यह पंच नहीं हैं, राच्छस हैं, पक्के राच्छस। यह सब हमारी जगह-जमीन छीनकर माल मारना चाहते हैं। डांड तो बहाना है। समझाती जाती हूँ, पर तुम्हारी आंखें नहीं खुलतीं। तुम इन पिसाचों से दया की आसा रखते हो, सोचते हो, दस-पाँच मन निकालकर तुम्हें दे देंगे। मुंह धो रखो।

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी कहानी के सम्राट 'प्रेमचंद' द्वारा लिखित पंच परमेश्वर से ली गई हैं जहाँ पंचों का आदर्शवादी वर्णन किया गया है।

इन पंक्तियों में पंचों के असामाजिक व्यवहार व अन्याय के रूप में होना बताया गया है कि कैसे जमीन को लूटकर वे अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। उस समय के सामंतवादी व्यवस्था व विद्रोह चेतना को व्यक्त किया है कि न्याय मिलना इन लोगों के वश में नहीं है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष →

① प्रेमचंद ने इसी विद्रोही चेतना को 'गोदान' में भी दिखाया है जहाँ अंग्रेजी अफसर के सामने होरी की पत्नी उसे समझाती है।

② 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति' निराला की ये पंक्तियाँ भी यही भाव को व्यक्त करती है।

③ आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की अभिव्यक्ति की गई है।

④ भाषा आम बोलचाल की है, जन साधारण में रोचकता पैदा करने वाली।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश आचार्य हजारी प्रसाद द्वारा लिखित ललित-निबंध 'कुटज' से उद्धृत है जिसमें कुटज के माध्यम से मानवीय द्वन्द्व का का वर्णन किया गया है।

द्विवेदी कहते हैं कि सुख और दुख, राग और विराग जो सामान्य रूप से जीवन के साथी हैं। इच्छा की पूर्ति पूर्णतः कभी न होती व असली सुख या संतोष तभी मिल सकता है जब मनुष्य मन की सवारी करे, न कि मन मनुष्य की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष -

① कामायनी में भी प्रसाद ने इस विषमता की स्थिति को दर्शाया है कि कैसे ज्ञान, इच्छा और क्रिया का समन्वय आनंद की प्राप्ति को मिलाता है।

② अस्तित्ववाद विचारधारा के सिद्धांत की कि, कोई भी निर्णय अपने आप में पूर्ण नहीं है अर्थात् व्यक्तित्व विभाजन को बताता है।

③ भाषा आम की खड़ी बोली व तत्सम का प्रभाव है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जमींदारी प्रथा खतम हो गई। अब जमींदार जमीन से बेदखल नहीं कर सकता। हमने उन्हें जमीन से बेदखल कर दिया। जो जोतेगा, जमीन उसकी है। जो जितना जोत सको, जिसकी जमीन मिले जोतो, बोओ, काटो। अब बाँटने का भी झंझट नहीं।... धरती माता का प्यार झूठा नहीं। फिर खेतों में जिंदगी झूमेगी। आषाढ़ के बादल बजा रहे हैं मादल, बिजली नाच रही है। तुम भी नाचो। ... नाचो रे! मादल बजाओ जोर-जोर से। पँचाय का नशा आज नहीं उतरेगा; जब तक पूर्णिमा का चाँद नहीं डूब जाए, घने बादलों में नाचना बंद नहीं होगा। चाँदनी की तरह प्रियतमा की मुस्कराहट, बाँसुरी-सी मीठी बोली तीर की तरह दिल पर घाव करती है।.. मेरे कलेजे पर फूलों से भरा हुआ सिर रख दो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश आंचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' से लिया गया है जिसके लेखक फणीश्वरनाथ रेणु हैं, इसमें जनजातियों द्वारा आंदोलन के बाद, स्वतंत्रता के समय जमींदार प्रथा की समाप्ति के उत्सव का वर्णन किया है।

डॉ. अशोक ने बताया है कि अब जमीन उसी की होगी जो खेती करता है। एवं वही ग्रामीण अर्थव्यवस्था की स्थिति सुधरेगी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) इसके बाद छोटे-छोटे दलों में बँटकर लोग आपस में बातचीत करने लगे। हाथों में क़ीमती गिलास थामे हुए कोई दल देश में बढ़ते भ्रष्टाचार पर चिंता कर रहा था, तो काई फैलती हुई अव्यवस्था पर। किसी के सोच और रोष का विषय था–देश का तेज़ी से गिरता हुआ नैतिक स्तर, तो किसी को दिन-ब-दिन बढ़ते हुए मूल्य परेशान कर रहे थे। रोगन-पॉलिश से चमकती हुईं, लकदक कपड़ों में लिपटी स्त्रियाँ पुरुषों की हाँ में हाँ मिला रही थीं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश राजनीतिक उपन्यास की प्रतिनिधि लेखिका 'मन्नू भंडारी' लिखित 'महाभोज' उपन्यास से लिया गया है। इसमें 'बिसू की हत्या' के फैसले के बाद आईजी के प्रमोशन की पार्टी का वर्णन किया गया है।

लेखिका इन पंक्तियों में अफसरशाही व्यवस्था का वस्तुस्थिति के वर्णन को बता रही हैं, कैसे लोग सामाजिक बुराइयों पर विचार तो करते हैं लेकिन खुद ही भ्रष्टाचारपूर्ण कार्यों में संलग्न रहते हैं जैसे कि बिसू हत्याकांड की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रिपोर्ट में फेरबदल करवाना में खुद आईजी साहब भी शामिल थे जिससे मि. सक्सेना को निलंबित होना पड़ा)

विशेष -

① इन पंक्तियों में नौकरशाही की चाटुकारिता पर व्यंग्य किया है।

② निष्क्रिय सोच रखने वाली, नारी जाति पर कटाक्ष किया है, जो कि बदलाव को बाधित कर रहा है।

③ संवाद शैली का उत्कृष्ट उदाहरण, वाक्यों को छोटे-छोटे बनाकर रोचकता पैदा की है।

④ भाषा में अंग्रेजी के 'पॉलिश' तो उर्दू के 'लवड़क' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) प्रेमचंद के निबंध 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1936 ई. में स्थापित प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई, एवं इसके प्रथम अध्यक्ष प्रेमचंद ने अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य के उद्देश्य पर अतुलनीय भाषण दिया उसी भाषण का लिखित रूप यह निबंध है।

इसमें उन्होंने बताया कि साहित्य को समय के अनुसार बदलना चाहिए व इसका उद्देश्य सामाजिक समस्याओं, निम्न वर्गों के प्रति भेदभाव की स्थितियों को उभारना है ताकि समाज के प्रति दायित्व निभाया जा सके।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उन्होंने कहा कि ~~साहित्य~~ साहित्यकार अपने विचारों में प्रगतिशील होना चाहिए यदि वह प्रगतिशील नहीं है तो साहित्यकार भी नहीं हो सकता। क्योंकि साहित्यकार अपने आस-पास की विद्रूपताओं को उखाड़ फेंक देने वाली प्रवृत्ति का होता है।

अपनी भाषण शैली में उन्होंने कहा है कि साहित्य, मनोरंजन का साधन नहीं है, इसका उद्देश्य समाज के प्रति जवाबदेही का है अतः दकियानूसी मानसिकता को छोड़कर नया बदलाव लाने की जरूरत है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उन्होंने भाषा पर बल दिया, साहित्य की भाषा आम जन की समझ में हो ताकि लोग ज्यादा से ज्यादा लोग अपने अधिकारों के बारे में जागृत हो।

जिस प्रकार आ. रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य का उद्देश्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति प्रतिबिम्बों की खोज करना बताया एवं कविता का उद्देश्य मनोरंजन नहीं बल्कि रसवादी व लोकमंगल की साधनावस्था को प्राप्त करना है वैसे ही प्रेमचंद ने इस निबंध में साहित्य के उद्देश्य का प्रतिपादन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

किया।

यहीं से प्रगतिशीलता की शुरुआत हुई और न केवल महिलाओं के अधिकारों बल्कि अंग्रेजों के द्वारा किये जा रहे शोषणों के खिलाफ आवाज बुलन्द हुई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) 'चिन्तामणि' के निबंधों में प्रौढ़ चिन्तन, सूक्ष्म विश्लेषण और तर्कपूर्ण विवेचन का चरम आदर्श लक्षित होता है। विवेचन कीजिए। 15

'चिन्तामणि' का नाम ही बताता है कि इसमें सूक्ष्म चिन्तन द्वारा गढ़ी गई मणियों का संकलन है, जो न केवल मनुष्य की समझ का विस्तार करती है बल्कि वस्तुनिष्ठता की ओर अग्रसर करती है।

'चिन्तामणि' आ० शुक्ल जी द्वारा लिखित है जो कि विचारप्रधान, मनोविकारप्रधान निबंधों का संकलन है। शुक्ल जी अपने काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों का प्रतिपादन 'कविता क्या है?' निबंध में करते हैं जिसमें एक लेखक की लोकतीय भावना का विस्तार, ~~विस्तार~~

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चिंतन व विश्लेषण के लेखन से होता है।

शुक्ल जी ने 'कविता क्या है' निबंध में काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है और कहा है कि "जिस प्रकार 'आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है।"

अतः कविता का उद्देश्य रसदशा को अर्जित करना है जो कि 'भावयोग' है जिसका पद 'कर्मयोग' या 'ज्ञानयोग' के समान है।

अब तार्किकपूर्ण युक्तियों के द्वारा शुक्ल जी ने अपने विचारों को सिद्ध किया है। यहाँ तक कि उन्होंने माना है ~~कि~~ कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आत्म निष्ठा को भी स्थान देना चाहिए क्योंकि विचारों की भिन्नता ही मनुष्यत्व की पहचान है।

'श्रद्धा और भक्ति' निबंध में शुक्ल जी ने न केवल प्रेम व लोभ जैसे तत्वों का समावेश किया है बल्कि इनमें अन्तर को भी स्पष्ट किया है। "श्रद्धा व प्रेम के योग को भक्ति बताया है।" राम व कृष्ण के क्षात्र धर्म पालन करने के कारण इन्हें श्रद्धा का पात्र माना है।

अतः जीवन के विभिन्न दशाओं व विचारगत वैविध्य का तर्कसंगत विवेचन चिंतामणि में मिलता है जिसकी तार्किकता उच्च कोटि व आदर्श है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'कविता क्या है' निबंध में आ. शुक्ल अपने काव्यशास्त्रीय संबंधी सिद्धांतों को बताते हैं कि कविता का उद्देश्य क्या होना चाहिए?

चूँकि शुक्ल जी रसवादी सिद्धांत व उसे परिवर्तित रूप 'लोकमंगल की साधनावस्था' के प्रवर्तक है तो वे कविता को समाज के प्रति जवाबदेही ठहराते हैं।

उनका मानना है कि कविता लिखना 'कर्मयोग' व 'ज्ञानयोग' से कम नहीं है क्योंकि यह

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भावयोग की ~~[illegible]~~ प्राप्ति कराती है व 'ब्रह्मानंद सहोदर' माने जाने वाले रसों की उपलब्धि कराती है।

आ० शुक्ल जी ने बताया कि कविता की भाषा संप्रेषणीय हो ताकि 'विचारों की गुम्फित' स्थिति को पाठक समझ सकें। उन्होंने आत्मनिष्ठ व वस्तुनिष्ठ में ज्यादा अंतर नहीं माना है। अलंकारों के प्रयोग को सीमित रखना चाहिए।

"कविता में अर्थग्रहण ही नहीं बिम्बग्रहण भी अपेक्षित है।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उन्होंने वक्रोक्ति सिद्धांत का खंडन तो किया लेकिन बिंबों के प्रयोग को सराहा है ताकि पाठकों के सामने विचार आसानी से पेश आ सके।

ध्यातव्य है कि इस निबंध के माध्यम से न केवल शुक्ल जी की विचारधारा बल्कि तर्कसंगत विवेचन व विभिन्न आयामों के मध्य सम्बन्ध को बताया है। उनका मानना है कि हृदय की मुक्ति कविता का लक्ष्य, जो कि रसदशा को उपलब्ध कराता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation